
Padyamaya Adarsha Sanskritavakyani

—
पद्यमय आदर्श संस्कृतवाक्यानि
—

Document Information



Text title : Padyamaya Adarsha Sanskritavakyani

File name : padyamayaAdarshasanskRRitavAkyAni.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



पद्यमय आदर्श संस्कृतवाक्यानि



संस्कृत की सभाओं एवं शिक्षासंस्थाओं में पोस्टर के रूप में लगाने योग्य तथा संस्कृत-सभाओं की शोभायात्रा में उद्घोष वाक्य के रूप में कहने योग्य दो-दो पंक्तियों के कुछ छोटे-छोटे पद्य -

संस्कृत-गौरव-गानम्

देश-जाति-उत्त्थानम् । १

देव-वाणी ही हमारे देश का सम्मान है,

देव-वाणी ही हमारे राष्ट्र का अभिमान है । २

संस्कृत भाषा वह गंगा की पावन निर्मल धारा,

जिसके स्पर्शमात्र से होता जीवन धन्य हमारा । ३

संस्कृत पढिये। आगे बढ़िये । ४

संस्कृत भाषा का अभ्यास ।

करता बौद्धिक-शक्ति-विकास । ५

जब घर-घर संस्कृत-प्रचार हो ।

तब सबका उत्तम विचार हो । ६

भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रभाषा है संस्कृत ।

भारतीय एकत्व-साधिका आशा संस्कृत । ७

भारतीय संस्कृति का संस्कृत मेरुदण्ड है ।

भारतीयता की रक्षा का गढ़ प्रचण्ड है । ८

संस्कृत है सब से आसान ।

दो दिन में बस इसका ज्ञान । ९

सुरभारती का अज्ञान ही सबसे बड़ा दौर्भाग्य है ।

सुरभारती-ज्ञान ही सबसे बड़ा सौभाग्य है । १०

संस्कृत हमारी भारती,


इसकी उतारें आरती । ११

जब तक ऋषिवाणी का फिर से घर-घर में संचार न होगा ।
तब तक भारत का निश्चित ही ऋषिऋण से उच्चार न होगा । १२
संस्कृत रक्षा । संस्कृति रक्षा । १३
संस्कृत भाषा पठनम् । देश जाति संगठनम् । १४
संस्कृत भाषा अति कठोर है ।
यह कहना अज्ञान घोर है । १५
अब भी तो संस्कृत शिक्षा पर ध्यान दीजिये ।
इसकी रक्षाहेतु आप कुछ काम कीजिये । १६
जिनको भारत और यहाँ की संस्कृत का है कुछ भी मान ।
उनको संस्कृत की रक्षा पर देना है आवश्यक ध्यान । १७
हिन्दी के विद्वान हमारे जब संस्कृति के ज्ञाता होंगे,
तभी वस्तुतः वे हिन्दी के भी सौभाग्य-विधाता होंगे । १८
भारतीय सब भाषाओं का तब तक ज्ञान अधूरा होगा,
पाठकगण को संस्कृत का भी जब तक ज्ञान न पूरा होगा । १९
संस्कृत की उन्नति में निश्चित भारत का उत्कर्ष,
संस्कृत की अवनति में निश्चित भारत का अपकर्ष । २०
मातायें, बहनें, कन्यायें भी अब संस्कृत पढ़ें प्रेम से,
कम से कम गीता का भी तो पाठ करें कुछ नित्य नेम से । २१
जीवन के अन्तिम क्षण में भी तो संस्कृत कुछ आप जान ले । २२
बिना संस्कृत पढ़े कोई नहीं विद्वान हो सकता ।
बिना इसके कहीं पर भी नहीं सम्मान हो सकता । २३
संस्कृत ग्रन्थों में जो अङ्कित जीवन के आदर्श,
उनसे ही निश्चित हो सकता मानव का उत्कर्ष । २४
जिसने किया न अच्छा अर्जित संस्कृत का है ज्ञान,
वह अपने को कह सकता क्या भाषा का विद्वान ? । २५

- रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

pdf was typeset on May 19, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

